# अध्याय 35

| 1. | प्रार्थना |
|---|---|

***समूह अगुवा.*** प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

| 2. | आराधना (20मिनट) *[ स्वभाव का प्रगटीकरण ]*<br>परमेश्वर की उपस्थिति की चाह करना |
|---|---|

**विषय : परमेश्वर की उपस्थिति की चाह करते हुए परमेश्वर की आराधना करें।**

**पढ़ें.** निर्गमन 33:12-17; रोमियों 8:31-34।

**1 जब परमेश्वर आपको किसी काम के लिए बुलाता है तो आप निम्नलिखित कामों को करें।**

**परमेश्वर से आपको उसके मार्ग की शिक्षा देने के लिए कहें।**

दूसरों को शिक्षा देने से पहले परमेश्वर का आपको सिखाना बहुत जरूरी है। जो कुछ परमेश्वर ने आपको बताया है, बारी आने पर आप भी लोगों को उन्हीं बातों को बता सकते हैं। खास तौर पर होने दें कि परमेश्वर आपको बताए कि वह कौन है, उनकी विशेषताएं क्या हैं, ताकि आप परमेश्वर को व्यक्तिगत व नज़दीकी तौर पर जान सकें और आप पर सदा परमेश्वर का अनुग्रह बना रहे। (निर्गमन 33:12-13)।

**परमेश्वर से आपके साथ चलने के लिए कहें।**

अपने जीवन व अपने कामों में परमेश्वर की उपस्थिति की कामना करें।

परमेश्वर के बिना बाहर जाकर परमेश्वर के कामों को करने का प्रयास न करें।

परमेश्वर से आपके साथ चलने और आपके द्वारा कार्य करने के लिए प्रार्थना करे (निर्गमन 33:14-15)

**2. परमेश्वर की उपस्थिति मसीहीयों को अलग बनाती है ( निर्गमन 33:18 )।**

एक बात मसीही अगुवों और मसीही लोगों को दूसरे अगुवों और दूसरे लोगों से अलग बनाती है, वह जीवते परमेश्वर की उपस्थिति है (मत्ती 28:20)।

- जब आप अपने पापों को अंगीकार करते और उसकी क्षमा और शुद्धता को प्राप्त करते हैं, तब परमेश्वर वहां पर विराजमान होते हैं (1यूहन्ना 1:9)
- जब आप परमेश्वर से एकान्त समय में सीखने के लिए उसके कदमों में बैठकर समय बिताते हैं, तब परमेश्वर वहां उपस्थित होता है (लूका 10:39)।
- जब आप अपने दैनिक कार्यों को परमेश्वर के काम समझकर करने लगते है, तो परमेश्वर वहां उपस्थित होता है। (कुलुस्सियों 4:17)।
- "यीशु मसीह के नाम में" का मतलब उद्धार के पूर्ण काम पर, बाइबल में उसकी प्रगट की गयी इच्छा पर और उसके प्रेम, उसकी शक्ति, बुद्धि और उसकी उपस्थिति पर आधारित होकर बोलना और कामों को करना है।
- जब आप पूरे दिन में किसी भी काम के लिए परमेश्वर से उसकी अगुवाई, बुद्धि, शक्ति और सहायता के लिए मांग करते हैं तो वह वहां उपस्थित होता है (नीतिवचन 3:5-6)। याद रखें कि परमेश्वर के बिना किसी भी काम को करने की जिम्मेदारी को करना व्यर्थ है (भजन127:1-2; यूहन्ना 15:5)! इसलिए अपने जीवन के प्रत्येक दिन को मं परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करें।

**3. परमेश्वर की उपस्थिति मसीहियों की सुरक्षा ह ( रोमियों 8:31-34 )**

पौलुस कहता है कि अगर परमेश्वर मसीहियों के साथ है, तो उनके विरोध में कौन हो सकता है? यदि परमेश्वर ने उन्हें पाप और मृत्यु से स्वतन्त्र कर दिया है (उन पर अधिकार करने वाले पाप के स्वभाव से ), यदि अपनी आत्मा के द्वारा उनका

नवीनीकरण कर दिया है, उन्हे अपने वारिस व सन्तान के रूप में स्वीकार कर लिया है और वह उन्हे लगातार शुद्ध करता है, तो उनका विरोधी कौन हो सकता है (रोमियों 8:31)?
यदि परमेश्वर ने इतने बड़ बडें कामों को कर दिया है तो वह इन छोटे कामों को भी न छोड़ेगा। यदि परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा विश्वासियों के लिए उद्धार का काम कर दिया है तो, वह विश्वासियों में निश्चय ही उद्धार के काम को और विश्वासियों के द्वारा शुद्धिकरण और सेवा के काम को भो पूरा करेगा। यदि परमेश्वर ने उसकी योजना में होकर अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को मसीहियों के लिए दे दिया, तो वह ज़रूरत पड़ने पर उनके उद्धार को पूरा करने के लिए और भी बातों का इन्तेज़ाम भी जरूर करेगा। परमेश्वर का अथाह प्रेम कभी मसीहियों को निराश नहीं कर सकता (रोमियों 8:32)! यदि परमेश्वर ने पहले ही पाप को क्रूस पर दोषी ठहरा दिया है, तो कौन मसीहियों पर दोष लगा सकता है (रोमियो 8:33-34)?
**आराधना।**
परमेश्वर की उपस्थिति की नियमित चाह करते हुए उसकी आराधना करें। तीन तीन लोगों के समूह में होकर परमेश्वर की आराधना करें।

| | | |
|---|---|---|
| **3.** | **बाँटना** (20 मिनट) | [ *शान्त समय* ]<br>**व्यवस्थाविवरण 11,13,16,17,18** |

**अपनी बारी** आने पर संक्षेप में **बताएं** (या अपने नोट में से **पढ़ें**) कि अपने दिये गये वचनों के आधार पर परमेश्वर के साथ एकान्त समय बिताने पर आपने क्या सीखा (व्यवस्थाविवरण11:13:21.13:1-5;16:18-20; 17:14-20;18:9-13;18:14-22) जब काई व्यक्ति अपने अनुभवों को बाँट रहा हो तो उसे गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| | | |
|---|---|---|
| **4** | **याद करना** (20 मिनट) | [ *संगति* ]<br>**मसीही समाज (कलीसिया)** |

परिचय। एक कोयला केवल तब ही लगातार धधकता रह सकता है जब वह दूसरे धधकते लाल जलते हुए अंगारों के साथ में रखा जाएं। इसी प्रकार से बढ़ौतरी करने तथा सक्रिय बने रहने के लिए मसीहियों को दूसरे मसीहियों के साथ मे संगति करने की जरूरत होती है। बाइबल में मसीही समुदाय को कलीसिया कहा जाता है। कलीसिया मसीह के देह है और उसे उसके सिर अर्थात यीशु मसीह से कभी अलग नहीं किया जा सकता है।
कलीसिया के विषय में बातचीत सामान्य तौर पर ऐतिहासिक पदों के बारे में चर्चा करने से प्रारम्भ हुई। हालांकि कलीसिया के विषय में बातचीत प्रभु यीशु मसीह व प्रेरितों की शिक्षाओं से शुरू होनी चाहिए। बाइबल कलीसिया को मसीह की एक देह कहती है।

---

## क. मसीही समाज (कलीसिया) का स्वभाव

नये नियम में प्रेरितों ने परमेश्वर के लोगों का वर्णन करने के लिए बहुत सी तस्वीरों का इस्तेमाल किया। ये तस्वीरें मसीही समाज के स्वभाव के बारे में शिक्षा देती हैं, जिस से मसीह समाज की संरचना और उसके कार्यो में असर पड़ना चाहिए।

**1.कलीसिया की पहली तस्वीर: कलीसिया (मसीही समाज) ईंटों से बनी कोई इमारत नहीं, वरन लोगों को वह समूह है जिसके मध्य में परमेश्वर वास करता है।**

**पढ़ें** 1 पतरस 2:4-5;इफिसियों 2:21-22; (प्रेरितों 17:24-25; 1 कुरिन्थियों 3:6-11)।
**खोजें व चर्चा करें।** इस तस्वीर में कलीसिया (मसीही समुदाय) का स्वभाव क्या है?
**ध्यान दें।**

**एक आत्मिक समाज।**

कलीसिया एक आत्मिक घर, परमेश्वर मे एक पवित्र मन्दिर,आत्मा में परमेश्वर का निवास स्थान है। वह कभी भी वो इमारत नहीं है जहां पर जाकर लोग मिलते हैं। कलीसिया वे लोग हैं जिनके हृदय में यीशु वास करता है। इसलिए कलीसिया को एक आत्मिक घर, परमेश्वर का एक पवित्र मन्दिर है और मसीह को प्रत्येक अनुयायी जीवित पत्थर कहलाता है।

**एक आत्मिक बुनियाद**

कलीसिया की बुनियाद बाइबल में पाये जाने वाले भविष्यद्वकताओं व प्रेरितों पर पड़ी हुई है। प्रेरित यीशु मसीह व पौलुस के चेले हैं। वे यीशु मसीह के एतिहासिक चश्मदीद गवाह थे जिनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। नये नियम के अन्य भविष्यद्वकताओं के साथ मिलकर (प्रेरितों 15:32,22),प्रेरितों ने सुसमाचार प्रचार किया, चेले बनाए और हर जगह पर स्थानीय **कलीसियाओं को निर्माण किया।**

## 2. कलीसिया की दूसरी तस्वीर: कलीसिया (मसीहियों का समाज) कोई कम्पनी नहीं या संगठन नहीं, वरन एक परिवार या घर है।

**पढ़ें** 1 तीमुथीयुस 3:14-15; इफिसुस 2:19; (इफिसुस 3:14-15)।

**खोजें और चर्चा करें।** इस तस्वीर में कलीसिया को स्वभाव क्या है?

**ध्यान दें।**

**एक परिवार या घर।**

कलीसिया परमेश्वर का घर या परिवार है।

**नया जन्म पाने के द्वारा बना एक परिवार।**

लोग किसी कम्पनी द्वारा वेतन प्रदान करने पर उस कम्पनी के कर्मचारी बन जाते हैं। लेकिन लोग परमेश्वर के परिवार के सदस्य केवल परमेश्वर के अनुग्रह और पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म प्राप्त करने के द्वारा बन पाते हैं (यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

**पिता, भाई व बहनों के साथ बच्चों का एक परिवार।**

एक कम्पनी में एक मालिक अपने कर्मचारियों के साथ बौस के रूप में व्यवहार करता है, लेकिन परमेश्वर के परिवार में परमेश्वर अपने बच्चों के साथ पिता के समान व्यवहार करता है। एक कम्पनी में सदस्य एक दूसरे के साथ सहकर्मियों के समान बर्ताव करते हैं, परन्तु परमेश्वर के राज्य में लोग एक दूसरे के साथ भाई और बहनों के समान बर्ताव करते हैं (1 तीमुथीयुस 5:1-2)।

**एक प्रेम करने वाला परिवार।**

एक कम्पनी के अन्दर सबसे महत्वपूर्ण कार्य उत्पदान को बनाना या काम करना है। लेकिन परमेश्वर के परिवार में सबसे महत्वपूर्ण बात परिवार में बने रहना और एक दूसरे के साथ प्रेम पूर्ण रिश्ता रखना है।

## 3. कलीसिया की तीसरी तस्वीर: कलीसिया (मसीही समाज) को संगठन नहीं,परन्तु एक जीवित जीव है।

**पढ़ें** इफिसियों 1:22-23; 4:16; प्रेरितों 15:28; (1 कुरिन्थियों 12:12-13; इफिसियों 2:14-15)।

**खोजें और चर्चा करें। इस तस्वीर में कलीसिया का क्या स्वभाव है?**

**ध्यान दें।**

**मसीह की देह।**

कलीसिया मसीह की देह ( इफिसुस 1:22-23) या एक नया व्यक्ति ह (इफिसुस 2:15)। कलीसिया को एक संगठन की तरह कार्य नहीं एक जीवित प्राणी के समान कार्य करना चाहिए। एक प्राणी के पास एक स्वस्थ व व्यवस्थित शरीर होता है, जिसमें शरीर के सारे अंग एक दूसरे के साथ मिलकर एक सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं।

**देह के विभिन्न अंग।**

एक संगठन में अस्थायी रूप में उसके सदस्यों के नाम लिखे होते हैं। लेकिन कलीसिया की सदस्यता नया जन्म पाने व लोगों के जीवन में पवित्र आत्मा के वास करने की वजह से स्थाई होती है (2 कुरिन्थियों 1:21-22)। मसीह में विश्वासी उसकी देह के अंग हैं और उनका मसीह में अटूट रिश्ता है।

**देह का सिर**

एक संगठन किसी मानवीय अगुवे (अध्यक, निर्देशक या चेयरमैन) द्वारा संचालित होता है। लेकिन मसीही देह उसके सिर,अर्थात यीशु मसीह के द्वारा संचालित होती है। (इफिसियों 1:22-23)

देह का लक्ष्य।

कोई सभी संगठन या संस्था मनुष्य द्वारा बनाये गये बाहरी लक्ष्यों, योजनाओं और नियमों द्वारा संचालित होती है। लेकिन मसीही देह परमेश्वर के ईश्वरीय वचनों और पवित्र आत्मा के द्वारा भीतरी लक्ष्यों द्वारा संचालित होता है। (इफिसियों 2:22)

एक संगठन में सीमित व विशेष कार्य होते हैं। लेकिन कलीसिया (मसीही समाज में)जीवन के हर क्षेत्र का ध्यान रखा जाता है (इफिसियों 1:9-10; 2 कुरिन्थियों 10:3-5)। कलीसिया व्यक्ति के आत्मिक जीवन और व्यवहारिक जीवन, सत्य और न्याय, परिवार व सामाजिक जीवन, वर्तमान जीवन और उसके भविष्य से जुड़ी होती है। संगठन में वोट या अधिकारी की इच्छा के अनुसार निर्णय लिये जाते हैं। लेकिन एक सच्ची कलीसिया में(मसीही समाज)हमेशा ऐसा निर्णय लिया जाता है जो बाइबल पर आधारित होता है और यह निर्णय ज्यादा से आपसी सहमती पर आधारित होता है(प्रेरितों 15:28)। एक संगठन एक गणतन्त्र होता है परन्तु कलीसिया (मसीही समाज) ईश्वरतन्त्र होता है।

**देह की बढ़ौत्तरी**

एक संगठन अपनी परम्पराओं के कारण ज्यादातर गतिहीन बन जाती है। लेकिन मसीही समाज लगातार आगे बढ़ता और नया होता चला जाता है(इफिसियों 4:16)।

एक संगठन के सदस्य समानता को बनाये रखने का प्रयास करते हैं: उन सबका दृष्टिकोण एक जैसा ही होता है, वे एक ही जैसे व्यवहार करते तथा उनके काम भी एक ही समान होते हैं। लेकिन मसीह की देह अर्थात कलीसिया में विविधताओं का स्वागत किया जाता है। मसीही के देह में विविध प्रकार के लोग, कार्य और आत्मिक वरदान पाये जाते हैं।

## 4. कलीसिया की चौथी तस्वीर: कलीसिया (मसीही समाज) मवेशियों को दल नहीं परन्तु भेड़ों का झुण्ड है।

**पढ़ें** 1 पतरस 5:1-4; 1 पतरस 2:25।

**खोजे व चर्चा करें।** इस तस्वीर में कलीसिया (मसीही समाज) का क्या स्वभाव है।

**ध्यान दें**

**चरवाहों के साथ एक झुण्ड।**

कलीसिया परमेश्वर के लोगों का झुण्ड है और उसे मुख्य चरवाहे, सह-चरवाहों और, प्राचीनों के द्वारा संचालित किया जाता है।

**अनुसरण करने वाला झुण्ड।**

संसार के ज्यादातर हिस्सों में,मवेशी उनके चरवाहों या रखवालों के आगे आगे चलते हैं। लेकिन भेड़े हमेशा अपने चरवाहों के पीछे चलती हैं। इसी प्रकार से, कलीसिया (मसीही का समाज) को मवेशियों के झुण्ड के समान नहीं बनना चाहिए जिन्हें बल प्रयोग करके, जोर जबरजस्ती से किसी दिशा में धकेला जाता है। परन्तु कलीसिया को भेड़ों के झुण्ड के समान होना चाहिए, जो स्वेच्छा से अपने मुख्य चरवाहे, प्रभु यीशु मसीह का किसी भी स्थान में ले जाने पर सम्पूर्ण हृदय के साथ अनुसरण करता है। प्राचीनों को उत्तम सह-चरवाहों के समान कलीसिया की सेवा व देखभाल करनी चाहिए। भेड़ों का झुण्ड अर्थात कलीसिया परमेश्वर की है न कि किसी प्राचीन या अगुवे की।

## 5. कलीसिया की पांचवी तस्वीर: कलीसिया (मसीही समाज) कोई विशिष्ट राष्ट्रीय संगठन नहीं परन्तु एक मिश्रित अर्न्तराष्ट्रीय ईकाई है।

**पढ़ें** 1 पतरस 2:9-10; प्रकाशितवाक्य 5:9-10; (इफिसियों 2:14-19)।

**खोजें और चर्चा करें।** इस तस्वीर में कलीसिया (मसीही समाज) का स्वभाव क्या है?

**ध्यान दें।**

**बहुत से राष्ट्रों में से चुना गया समाज।**

कलीसिया परमेश्वर के द्वारा चुना गया समाज, एक पवित्र जाति और उसके अपने निज लोग हैं। यह परमेश्वर का चुना हुआ पवित्र समाज है, जिसे संसार भर के सारे देशों के लोगों को मिलाकर बनाया गया है। "पहले तुम तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो" (1 पतरस 2:10)। मसीहियों को अपनी कलीसिया (मण्डली) को एक राष्ट्रीय समुदाय नहीं समझना चाहिए, जो दूसरे देशों या जाति के लोगों को शामिल करने से मना करती है। मसीहियों को कलीसिया को कोई संगठन या संस्था नहीं समझना चाहिए क्योंकि संस्था दूसरे सच्चे मसीहियों को अपने साथ शामिल करने से बचती है। परमेश्वर है जो अपनी पवित्र जाति या राज्य होने के लिए लोगों को चुनाव करता है कोई कलीसिया नहीं (2थिस्लुनिकियों 1:1; 2 थिस्लुनिकियों 2:13-14)।

**एक अर्न्तराष्ट्रीय राज्य।**

परमेश्वर संसार के सारे गोत्रों, जाति व भाषा के लोगों को शामिल करता है। यीशु मसीह के सम्पूर्ण उद्धार के काम ने व्यवस्था व नियम कानून की विभाजित करने वाली दीवार को गिरा दिया है, जिसने सदियों से यहूदी देशों से गैर यहूदी देशों से अलग करके रखा है। इसी तरह, मसीह ने अपने चुने हुए लोगों की परमेश्वर व अन्य दूसरों लोगों से मेलमिलाप कराने में सहायता की। वर्तमान काल में कलीसिया ( मसीही समाज) परमेश्वर के राज्य का प्रत्यक्ष प्रारूप है।

**6. कलीसिया की छठी तस्वीर : वर्तमान कलीसिया (मसीही समाज या मसीहियों का समुदाय) वास्तविक सच्चाई नहीं हैं, परन्तु वह आने वाले समय में सिद्ध वास्तविकता बन जाएगी।**

**पढ़ें** गलातियों 4:21-31; प्रकाशितवाक्य 19:5-10; 21:1-2,9-10; मत्ती 13:24-30,36-43

**खोजें और चर्चा करें।** इस तस्वीर में कलीसिया (मसीही समाज) का क्या स्वभाव है?

**ध्यान दें।**

**कलीसिया एक स्वर्गीय यरूशलेम है( गलातियो 4: 21-31)।**

दासी (हाजिरा) उस समाज को प्रगट करती है जो व्यवस्था की वाचा के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं। इसका अभिप्राय खास तौर पर मूसा को बतायी गयी उन विधियों से है, जिसे परमेश्वर द्वारा अब्राहम के साथ बांधी गयी वाचा के करीब 430 वर्षों के बाद दिया गया था। हाजिरा से होने वाले बच्चे व्यवस्था के गुलाम होते हैं। वे लोग आज भी व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं। वर्तमान काल में यरूशलेम में रहने वाले लोग व्यवस्था के दास हैं। परन्तु स्वतन्त्र स्त्री (सारा) ऐसे समाज को दर्शाती है जो प्रतिज्ञाओं की वाचा के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यह अनुग्रह की वाचा अब्राहम के साथ बांधी गयी थी और उसे पुराने नियम के काल में पुन: सुनिश्चित किया जाता रहा। सारा उन बच्चों को जन्म देती है जो यीशु मसीह के द्वारा स्वतन्त्र होते हैं। ये लोग पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाए हुए और विश्वास द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से धर्मी ठहरते हैं।

वर्तमान यरूशलेम के नागरिक यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोग हैं,चाहे उन्होंने पुराने नियम के दौरा यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले विश्वास किया हो (यशायाह 53:4-6; गलातियों 3:8; इब्रानियों 11:8-10, 13-16) या उसके आगमन के बाद में विश्वास किया हो। यीशु मसीह में आये बहुत से विश्वासी आज भी इस धरती पर जीवन व्यतीत कर रहे हैं लेकिन उनके लिए स्वर्गीय यरूशलेम उनकी माता के समान है(फिलिप्पियों 3:20)। यीशु मसीह में सारे विश्वासी जिनका देहान्त हो चुका है वे यीशु मसीह के साथ स्वर्गीय यरूशलेम में समय बिता रहे हैं(इब्रानियों 12:22-24)।

**कलीसिया अपने को नये यरूशलेम के लिए तैयार कर रही ह (प्रकाशितवाक्य 19:5-10; 21:1-2,9-10।**

कलीसिया को मसीह की दुल्हन होना है, इस कारण अपने विवाह के लिए उसे अपने आप को तैयार करने की जरूरत है। मेम्ने का विवाह मसीह के दूसरे आगमन के बाद ही होगा,क्योंकि उसी के बाद कलीसिया को अपनी परिपूर्णता प्राप्त होगी। उसी के बाद वे यहूदी जिन्होंने इतिहास में यीशु मसीह पर विश्वास किया है अपनी परिपूर्णता को प्राप्त करेंगे। केवल उसी के बाद सारी अन्यजातियां जिन्होने यीशु मसीह पर विश्वास किया है अपनी परिपूर्णता को प्राप्त करेंगे(रोमियों 11:25-26)।

उस समय तक यीशु मसीह अपनी कलीसिया को तैयार कर रहा है(इफिसियों 5:25-27) और कलीसिया अपने आप को मेम्ने के विवाह के लिए तैयार कर रही है( 2 कुरिन्थियों 11:1-3; प्रकाशितवाक्य 19:7)। अत: वर्तमान मसीही कलीसिया अपनी वास्तवितका में परिपूर्ण नहीं है।

**कलीसिया में इस धरती पर वास करने वाली उसकी सेना तथा स्वर्ग में जयवन्त समाज शामिल है।**

वर्तमान मसीही समाज में धरती पर कलीसिया के योद्धा (मत्ती 16:18-19; इफिसियों 6:10-18; इब्रानियों 11:9-10:13;12:1-3; 13:13-14; प्रकाशित वाक्य 12:10-12) और स्वर्ग में जयवन्त कलीसिया शामिल है (इफिसियो 3:14-15; 1 थिस्लनिकिया 4:13-17; इब्रानिया 11:10, 14-16;12:22-24; 13:14)

लेकिन मसीह के दूसरे आगमन पर, मेम्ने का विवाह होगा तथा वर्तमान यरूशलेम नये यरूशलेम या मेम्ने की दुल्हन या मेम्ने की पत्नी के रूप में स्वर्ग से नीचे उतरेगा( सब लोगों का न्याय बादलों पर होगा) (प्रकाशितवाक्य 21:1-2,9-10)। तब ही कलीसिया जयवन्त कलीसिया व सिद्ध समाज बन पाएगा (यूहन्ना 3:1-3)। उसके बाद सर्वशक्मिान परमेश्वर व उसका मेम्ना उसके साथ वर्तमान पृथ्वी पर वास करेंगे। उसके बाद वह सब चीजों को नया कर देगा (प्रकाशितवाक्य 21:3-5)

**कलीसिया इस समय असिद्ध राज्य है लेकिन आने वाले समय में वह सिद्ध राज्य बन जाएगा( मत्ती 13:24-30, 36-43 )।**

यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले,वर्तमान मसीही कलीसिया, वर्तमान काल में परमेश्वर के राज्या के एक भाग के रूप में, सच्चे मसीहियों व नामधारी मसीहियों को एक मिश्रित समूह है। सच्चे मसीही अभी तक सिद्ध नहीं हुए हैं वरन वे निरन्तर आत्मिक व नैतिक तौर पर बढ़ौतरी कर रहे हैं। नामधारी मसीही ज्यादातर सच्चे मसीहियों के जैसे ही प्रतीत होते हैं, लेकिन उनके जीवन व हृदय का नया जन्म नहीं हुआ होता है।

उदाहरण के तौर पर, नामधारी मसीही तन तम्बाकू के समान होते है जो अनाज दिखई पड़ते हैं (मत्ती 13:24-30,47)। वे इस प्रकार की बातें करते या प्रगट करते हैं कि मानों वे भी सच्चे विश्वासी है (मत्ती 7:21-22)। वे सूखे व फलरहित शाखाएं हैं लेकिन देखने में वे दाखलता के समान नज़र आती है। (यूहन्ना 15:1-6)। वे ऐसे झुण्ड का हिस्सा है जो विशेष कर सत्य को बिगाड़ने तथा चेलों को बहकाने के लिए खड़े हुए हैं (प्रेरितों 20:29-31)।

व झूठे प्रेरित हैं जो किसी दूसरे यीशु का प्रचार करते, जिनमें दूसरी ही प्रकार की आत्मा पायी जाता और बाइबल पर आधारित सुसमाचार से हटकर कोई दूसरा ही सुसमाचार प्रचार करते हैं (2कुरिन्थियों 11:4,12-15)। वे झूठे भाई हैं जो सत्य को बिगाड़ने के लिए दबें पाव चर्च में घुस आते हैं (गलातियों 1:6-9; 2:4-5)।

वे ऐसे लोग हैं जिनके जीवन में परमेश्वर के मुख का प्रकाश चमका,उन्होने शायद बपतिस्मा भी प्राप्त किया हो, हो सकता है कि वे प्रभु भोज के भी भागीदार रहे हों,हो सकता है कि उन्होंने सुसमाचार भी प्रचार किया हो, हो सकता है कि उन्होंने परमेश्वर के बहुत से चमत्कारी कामों को भी देखा हो(अर्थात आत्मा के द्वारा प्रगट किये जाने सामर्थी कामों को भी किया हो) लकिन फिर भी वह परमेश्वर से दूर हो गये। उन्होंने यीशु को पुनः क्रूस पर चढ़ा दिया और यीशु को सबके सामने पैरों तले रौंद दिया। जब उनके जीवन से लगातार कांटें और ऊँट कटारे ही उत्पन्न होने लगे तो यह पता चल गया कि वे जीवित शाखाएं नहीं थे। और अन्त में जलाया जाना ही उनका भाग्य होगा (इब्रानियों 6:4-8)। इस प्रकार के लोग जब वास्तव में नया जन्म पाएंगे केवल तभी उन्हें पूरी तरह से क्षमा प्राप्त होगी( इब्रानियों 8:10-12)।

लेकिन यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, बिना नया जन्म पाये हुए लोग, दुष्ट जन और वे बातें जिनकी वजह से पाप उत्पन्न होता है सब उसके राज्य से उखाड़ कर नरक कुण्ड में फेंक दी जाएंगी (मत्ती 13:36-43,48-50; 25:31-33; यूहन्ना 15:6)। तब अन्त में मसीही कलीसिया का प्रगटीकरण इस धरती पर परमेश्वर के राज्य के रूप में होगा (मत्ती 25:34; प्रकाशितवाक्य 11:15)।

---

## ख एक मसीही समाज ( कलीसिया )

बाइबल बताती है कि केवल एक ही मसीह की देह है। केवल एक ही सार्वभौमिक मसीही समाज या चर्च है।

### 1. मसीही कलीसियाए ( समाज ) किस प्रकार यीशु मसीह से सम्बन्ध रखता है।

**खोजें व चर्चा करें।** कलीसिया को किस प्रकार यीशु मसीह से जुड़ा हुआ होना चाहिए?

**( 1 ) एक सच्ची कलीसिया जानती है कि यीशु मसीह उसका उद्धारकर्ता व स्वामी है!**

**पढ़ें** प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 1:18-19

**ध्यान दें।** मसीही कलीसिया(समाज) किसी मनुष्य, किसी संस्था की जागीर नहीं है परन्तु कलीसिया केवल यीशु मसीह की है। यीशु मसीह कलीसिया को "मेरी कलीसिया" कहत हैं। यह परमेश्वर की कलीसिया है, जिसे यीशु ने अपने लहू से खरीदा है। क्रूस पर अपनी मृत्यु व अपने पुनरूत्थान के द्वारा, यीशु ने विभिन्न जातियों,भाषाओं,देशों व गोत्रों से अपने लोगों को खरीद लिया। वे सब उसकी सम्पत्ति है, जिसे पैसों से नहीं बल्कि उसके खद के लहू से खरीदा गया है (1 कुरिन्थियों 6519-20)।

**( 2 ) एक सच्ची मसीही कलीसिया पहिचानती है कि यीशु मसीह ही उसका संस्थापक व निर्माता है।**

**पढें.** मत्ती 16:18-19

**ध्यान दें।** मसीही कलीसिया (समाज) का निर्माण किसी मनुष्य या किसी मानवीय संस्था ने नहीं किया है,वरन उसका निर्माण यीशु मसीह ने किया है। यीशु मसीह ने कहा,"मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया को बनाऊंगा" । उसने प्रेरितों की बुनियाद पर कलीसिया का निर्माण किया, जिसमें प्रेरित पतरस ने मुख्य भूमिका निभाई। पतरस यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के बीच में प्रथम कलीसिया का निर्माण करने में शामिल था।

**( 3 ) सच्ची मसीही कलीसिया जानती है कि यीशु मसीह उसका सिर व प्रधान ( बिशप ) है।**

**पढ़ें** कुलुस्सियों 1:17-18; 1 पतरस 2:25; 5:4

**ध्यान द।** मसीही कलीसिया(समाज) का कोई मनुष्य या कोई संस्था प्रधान नहीं है। बाइबल में किसी मनुष्य या प्रेरित या बिशप , या किसी परिषद या लोगों के दल को या किसी संगठन को कलीसिया को सिर या प्रधान नहीं कहा गया है।बाइबल यीशु मसीही को 'प्रेरित' (ग्रीक: अपोस्टोलास) और 'महायाजक'(ग्रीक: आर्किरियस) (इब्रानियों 3:1);' चरवाहा' (ग्रीक:पोईमैन) और 'निरीक्षक'(बिशप)(ग्रीक: इपिस्कोपोस) (1पतरस 2:25; 5:4); और 'कलीसिया का सिर' (ग्रीक :केपहाले) ( इफिसियों 1:22; कुलुस्सियों 1:18)। सारी सार्वभौमिक कलीसिया और स्थानीय मण्डलियों को केवल एक ही सिर है अर्थात यीशु मसीह। यीशु मसीह में होकर परमेश्वर ने अपने आप को प्रगट किया है: "तुम्हें उसकी बातों को सुनना चाहिए!" (मत्ती 17:5); और कोई भी मनुष्य या अगुवा इस स्थान को नहीं ले सकता।

यीशु मसीह बाइबल के द्वारा(उसके सही मतलब के द्वारा), पवित्र आत्मा के द्वारा (जो कभी भी बाइबल के विरूद्ध बात नहीं करता)और मण्डली के प्राचीनों के परिषद के द्वारा, कलीसिया के सिर या निरीक्षक के रूप में अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

यीशु मसीह केवल कलीसिया का ही प्रधान नहीं बल्कि सारे जगत में शिरोमणी है (इफिसियों 1:10,22)। सारा जगत अपनी सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पूरी तरह से यीशु मसीह पर निर्भर है (इब्रानियों 1:3)। यीशु मसीह कलीसिया के फायदे के लिए सारे जगत का संचालन करता है! यीशु मसीह सारी आसमानी शक्तियों, तारागणों पर भी प्रधान है और सम्पूर्ण सौर्य मण्डल में कोई ऐसा स्थान नहीं है जो उसके नियन्त्रण से बाहर हो (मत्ती 28:18; 1 पतरस 3:22)।

**(4) एक सच्ची मसीही कलीसिया पहिचानती है वह मसीह की देह, मसीह की पूर्णता व मसीह की पूरक है।**

**पढ़ें** इफिसियों 1:22-23।

**ध्यान दें।** एक मण्डली या सार्वभौमिक कलीसिया किसी मानवीय संस्था (संगठन) का विस्तार नहीं, बल्कि स्वयं यीशु मसीह का सम्पूरक है। जिस प्रकार से दुल्हन दुल्हे की पूरक है, उसी प्रकार से कलीसिया (मसीही समाज) यीशु मसीह के लिए पूरक है। कलीसिया (मसीही समाज) और यीशु मसीह, दोनों की एक ही देह का हिस्सा हैं, जिसमें सम्पूर्ण देह अपने सिर की इच्छा को पूरा करती है। मसीही कलीसिया (समाज) को किसी मनुष्य (किसी मसीही अगुवे, पासबान,बिशप या प्रेरित) की इच्छा को या संस्था( किसी संगठन, किसी सम्मेलन, दल या परिषद) की इच्छा को पूरा करने के लिए नहीं बुलाया गया है। जैसा कि बाइबल में प्रगट किया गया है मसीही कलीसिया (समाज) को यीशु मसीह की योजना और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए बुलाया गया है। यीशु मसीह ने कलीसिया का पापियों के उद्धार के प्रति अपनी योजना बताने के लिए,विश्वासियों की बढ़ौत्तरी व उनके शुद्धिकरण के लिए तथा संसार में धार्मिकता तथा उसके राज्य का निर्माण करने के लिए इस्तेमाल किया। उसका राज्य सबसे पहले उसके लोगों के बीच में (लूका 17:21-22), उसके बाद वर्तमान संसार में (मत्ती 12:28), लेकिन उसका राज्य इस संसार का नहीं है( यूहन्ना 18:36-37), और अन्त में यह धरती और सारा संसार बिल्कुल नया होगा( मत्ती 25:34; प्रेरितों 3:21; प्रकाशितवाक्य 21:1-5)।

**(5) सच्ची मसीही कलीसियाएं हर पीढो में परमेश्वर को ही सारी महिमा देती आयी हैं।**

**पढ़.** इफिसियों 3:21

**ध्यान दें।** मसीही कलीसिया (समाज) कभी किसी मनुष्य या किसी संस्था को महिमा नहीं देता वरन वह यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर पिता को ही महिमा प्रदान करता है (यूहन्ना 16:14)। परमेश्वर अपनी महिमा किसी के साथ भी नहीं बांटता है चाहे वह मनुष्य हो या कोई मूरत (यशायाह 42:8;48:11)

## 2. मसीही कलीसिया (समाज) का निर्माण किस प्रकार हो रहा है।

**सिखाएं।** मसोही कलीसिया कभी भी उदासीन या अचल अवस्था में नहीं रहती। कलीसिया अपनी आत्मिक व सांख्यिक दोनो दशाओं में बदलती है। कलीसिया में संख्या बढ़ने के लिए उसकी गुणवत्ता में बढ़ौतरी होना बहुत जरूरी है। मसीही कलीसिया प्रत्येक सदस्य के काम करने से, विश्वासियों के बीच में बढ़ते रिश्तों की वजह से और विश्वासियों की बढ़ती परिपक्वता के कारण बढ़ती है।

**(1) एक सच्ची कलीसिया प्रचार कार्य के द्वारा संख्या में बढ़ती है।**

**पढ़ें** प्रेरितों 20:20-27; इफिसियों 3:6-12

**खोजें और चर्चा करें।** कलीसिया किस प्रकार से संख्या में बढ़ती है?

**ध्यान दें।** मसीही कलीसिया लोगों के बीच में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा बढ़ती है। मसीह के अनुयायी परमेश्वर के अनुग्रह के संदेश को सुनाते हैं और लोगों को बताते हैं कि उन्हें अपने पापों से पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए और यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। वे उनके बीच में परमेश्वर के राज्य (परमेश्वर के अधिकार) का, परमेश्वर

की सम्पूर्ण मनसा,मसीह में छुपे हुए धन और परमेश्वर के नाना प्रकार के ज्ञान का प्रचार करते हैं। कोई भी जन जन्म से मसीही पैदा नहीं होता है। एक सच्चें मसीही को नया जन्म पाया हुआ होना चाहिए। बिना नया जन्म पाए हुए कोई भी जन मसीही की देह का सच्चा अंग या सदस्य नहीं बन सकता है( 1 कुरिन्थियों 12:12-13; यूहन्ना 3:3-8)। यीशु मसीह पर विश्वास किये बिना किसी का भी उद्धार सम्भव नहीं है(यूहन्ना 3:16, 18, 36; 14:6; प्रेरितों 4:12)।

**( 2 ) एक मसीही कलीसिया स्थापना के द्वारा मज़बूती के द्वारा अपनी गुणवत्ता में बढ़ती है।**

**पढ़ें**, मत्ती 28:19; इफिसियों 4:11-16।

**खोजें और चर्चा करें।** कलीसिया किस प्रकार से गुणवत्ता में बढ़ती है?

**ध्यान दें।** मसीही कलीसिया नये विश्वासियों को मसीह में परिपक्वता में बढ़ाकर उन्हें मज़बूत करने के द्वारा बढ़ती है। नये विश्वासियों को मसीह में परिपक्व होने में सहायता करना को चेले बनाना भी कहा जाता है (मत्ती 28:18-20) यह काम परिवक्व मसीहियों के द्वारा दूसरे मसीहियों की मदद के द्वारा एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारियों को पूरा करने के द्वारा किया जाता है( उदाहरण के लिए , एक दूसरे को प्रेम करना, एक दूसरे का बोझ उठाना, एक दूसरे को प्रोत्साहित करना इत्यादि)। शिष्य बनाने के काम का अर्थ किसी नये विश्वासी को किसी विशेष कलीसिया का सदस्य बनाना नहीं परन्तु उनकी यीशु मसीह का शिष्य बनने में सहायता करना है। वे उन्हें मसीह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने में, मसीह की आज्ञापालन करने तथा उन्हें मसीह के समान चरित्र प्राप्त करने में सहायता करते हैं( इफिसियों 4:13)।

परिपक्वता के कुछ प्रत्यक्ष लक्षण निम्नलिखित हैं:

- उनमें बाइबल कि सिद्धान्तों को लेकर (मसीही विश्वास को लेकर) तथा यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में जानने तथा उसके साथ प्रतिदिन संगति करने को लेकर एकता होती है(इफिसियों 4:13)
- बाइबल की शिक्षाओं में स्थिरता तथा परख होती है (इफिसियों 4:14;रोमियों 6:17; तीतुस 1:9)
- और उनके बीच सारे रिश्तों में सत्य और प्रेम पाया जाता है ( इफिसियों 4:15)।

मसीही कलीसिया की बढ़ौतरी का सबसे बढ़ा दुश्मन उनका सत्य से भटककर झूठ से समझौता कर लना है,चाहे वह विश्वास में हो, बातों में हो या कामों में हो। दूसरी कलीसिया की बढ़ौतरी में सबसे बढ़ी बाधा यह है कि हम जिन लोगों में सेवा करने या उन्हें मसीह में जीतने का प्रयास कर रहे हैं, उनके विचारों, भावनाओं, उनकी दिक्कतों और उनकी रूचियों की परवाह नहीं करते।

**( 3 ) लोगों को तैयार करने के द्वारा एक सच्ची मसीही कलीसिया का निर्माण होता है।**

**पढ़ें,** मरकुस 13:34; इफिसुस 4:12,16

**ध्यान दें।** मसीही कलीसिया लोगों को परमेश्वर की सेवा कार्य के लिए तैयार करने के द्वारा बनायी जा रही है। तैयार करने का अर्थ (ग्रीक:कटारटिसमौस: इफिसियों 4:12; कटारिज़ो: लूका 6:40; इब्रानियों 13:21; एक्ज़ार्टिजों : 2 तीमुथीयुस 3:17)अर्थात बहाल करना, किसी चीज को पूरा करना, प्रशिक्षित करना या तैयार करना। कलीसिया में किसी विशेष कार्य के लिए मसीहियों के तैयार करना, विभिन्न क्षेत्रों में वरदान पाये हुए लोगों द्वारा किया जाता है (इफिसियों 4:11) यह जरूरी नहीं है कि लोगों को प्रशिक्षित करने का कार्य कोई प्राचीन या अगुवा ही करें। मसीहियों को स्थानीय कलीसिया तथा सार्वभौमिक कलीसिया में बहुत से कामों को करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उदाहरण के तौर पर, मसीह के कुछ अनुयायियों का प्रचारक होने के लिए, कई को नये विश्वासियों की देखभाल करने के लिए तैयार किया जाता है। इसी प्रकार मसीह के कुछ अनुयायियों को प्रचार करने या शिक्षा देने, जबकि दूसरों को अगुवाई करने तथा दया दिखाने के लिए तैयार किया जाता है। मसीही कलीसिया(समाज ) का कोई भी जन कलीसिया या घरेलू कलीसिया में उदासीन या बेकार बैठने के लिए नहीं है। अत: हर एक सदस्य को अपना वह काम पूरा करना चाहिए जो मसीह की ओर से उसे पूरा करने के लिए दिया गया है (1 कुरिन्थियों 3:5;मरकुस 13:34)

---

## ग.अनेकों मसीही कलीसियाएं ( मण्डलियां )

### 1. किसी प्रकार से मसीही मण्डलियों ( समाज ) का निर्माण हुआ।

**सिखाएं।** कलीसिया मसीह की देह है। यह अपने आप को बहुत से मसीही समुदायों या मण्डलियों के द्वारा प्रगट करती है। एक तरफ तो कलीसियाएं परमेश्वर के महान कामों को नतीजा है और दूसरी तरफ यह मसीहियों द्वारा मत्ती 28:19 में दी गयी आज्ञा "जाओं और सारी जातियों के लोगों को चेला बनाओ.." को मानने का नतीजा है। उदाहरण के लिए:

**प्रेरितों 2.** परमेश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा को लोगों पर उण्डेला और प्रेरित पतरस ने सुसमाचार प्रचार किया। जिसके परिणाम स्वरूप, यहूदियों के बीच में प्रथम कलीसिया का निर्माण हुआ। (ई.प. 30)।

**प्रेरितों 8.** परमेश्वर ने यरूशलेम की कलीसिया के विरूद्ध सताव होने की अनुमति दी जिसके कारण वहां से सारे विश्वासी तितर बितर हो गये। (ई.प. 33/34)। वे जहां कहीं गये उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया। जिसके परिणाम स्वरूप, सारे यहूदिया, गलील और सामरिया में कलीसिया की स्थापनाएं हो गयीं (प्रेरितों 9:31)

**प्रेरितों 10.** परमेश्वर ने सेना के अधिकारी कुरनेलुयिस व उसी समय पर प्रेरित पतरस को दर्शन दिया, जिसके बाद पतरस ने अन्यजातियों में जाकर सुसमाचार प्रचार किया। जिसके परिणाम स्वरूप कैसरिया में पहली गैर यहूदी कलीसिया का निर्माण हुआ(ई.प. 40)।

**प्रेरितों 11.** जितने मसीही विश्वासी सताव के कारण तितर बितर हो गये थे परमेश्वर का हाथ उनके साथ में बना हुआ था। वे सीरिया के अन्ताकिया में सुसमाचार प्रचार करने लगे। जिसके परिणाम स्वरूप परदेश में एक बढ़ी कलीसिया की स्थापना हुई (ई.प. 44)।

**प्रेरितों 13-14.** परमेश्वर ने पौलुस और बरनाबास को बुलाया और उन्हें सेवकाई के लिए अलग करके मिश्नरी यात्रा पर भेज दिया, वे जिस भी नगर में गये वहां जाकर उन्होने शिष्यों को निर्माण किया। जिसके परिणाम स्वरूप दूसरे देशों में भी कलीसिया की स्थापना हुई। पथम मिश्नरी यात्रा (ई.प. 47-48), दूसरी मिश्नरी यात्रा (ई.प. 50-52) और तीसरी मिश्नरी यात्रा (ई.प. 52-57)।

प्रेरितों 16-20.पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर ने मिश्नरियों की अगुवाई की कि उन्हें कहां जाना चाहिए और कहां नहीं जाना चाहिए। जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंन नये नये स्थानों में जाकर सुसमाचार प्रचार किया। सम्पूर्ण यूरोप में बहुत सी कलीसियाओं की स्थापना की गयी (प्रेरितो 16-20)। परमेश्वर ने पौलुस को एक खास स्थान पर ठहरकर कुछ लम्बे समय के लिए प्रचार करने का आदेश दिया(प्रेरितों 18)।

## 2. किसी प्रकार से स्थानीय मसीही कलीसियाओं ( समुदायों ) ने उस समय पर काम किया।

**पढ़ें.** प्रेरितों 2:42; प्रेरितों 5:15-16; 42

**खोजें और चर्चा करें।** किस प्रकार से इन स्थानीय मसीही मण्डलियों ने काम किया?

**ध्यान दें।** कलीसियाओं की मुख्य गतिविधी उस समय पर एकत्रित होना और तितर बितर होना थीं। मसीही लोग हर जगह पर लगातार आराधना, प्रार्थना, शिक्षा, प्रचार, बपतिस्मा और प्रभु भोज और संगति और सेवा के लिए मिला करते थे।

वे अपने आस पड़ोस, गलियों और घरों में और यहां तक कि प्रचार करने, सिखाने और चंगा करने के लिए पड़ोसी नगरो में भी फैल गये।

## 3. किस प्रकार से स्थानीय मसीही मण्डलियों ( समुदायों ) को अगुवाई प्राप्त हुई।

**पढ़ें,** 1 तीमुथीयुस 3:14-15; 4:14; (प्रेरितों 14:21-23; 20:17,28; 1 तीमुथीयुस 3:1-7;तीतुस 1:5-9; 1 पतरस 5:1-4)।

**खोजें व चर्चा करें।** किस प्रकार से मसीही स्थानीय मण्डलियों को अगुवाई प्राप्त हुई?

**ध्यान दें।** लूका द्वारा लिखित प्रेरितों के काम की पुस्तक, तथा पौलुस और पतरस की पत्रियां हमें स्पष्ट रूप में बताती हैं कि मण्डलियों की अगुवाई प्राचीनों द्वारा की जाती थी(ग्रीक:प्रेस्बीटीरोई) (प्रेरितों 14:23),जिसे एक संगठन या प्राचीनों का परिषद कहा जाता था(ग्रीक:प्रेस्ब्यूटीरियन) (1तीमुथीयुस 4:14)

प्राचीनों की योग्यता, उनके लक्ष्य व उनकी सीमित अधिकारों को किसी मनुष्य, किसी संस्था,मानवीय रीतियों के द्वारा निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे बाइबल में स्पष्ट रूप में निर्धारित की गयी हैं। हालांकि मण्डली के अपने अगुवे होते हैं, लेकिन ये अगुवे अपने मन की इच्छानुसार मण्डली की अगुवाई नहीं कर सकते हैं। बाइबल में कलीसिया में किये जाने वाले व्यवहारों के बारे में बताया गया है (1 तीमुथीयुस 3:14-15)। मण्डली के किसी भी अगुवे को बाइबल में दिये हुए निर्देशों को बदलने का अधिकार नहीं है। इसके अलावा, प्रभु यीशु और प्रेरित पतरस शिक्षा देते हैं कि कोई भी मण्डली का अगुवा उनके हाथों में सौंपे गये लोगों पर प्रभुता न करे (मत्ती 20:25-28; 1 पतरस 5:2-3)।

## 4. स्थानीय मसीही कलीसियाओं ने अपनी सभाएं किन स्थानों में की।

**पढ़ें.** फिलेमोन 1:1-2; प्रेरितों 5:42; प्रेरितों 12:5,12; प्रेरितों 10:24-27

**ध्यान दें।** नये नियम जिन मण्डलियों के बारे में बताया गया है वे सारी मण्डलियां मसीहियों के घर में जमा हुआ करती थीं। ये मण्डलियां घरेलू कलीसियाएं थी। वे नियमित तौर पर आराधना करने, शिक्षा देने व प्रचार करने, प्रार्थना करने, सुसमाचार सुना

और सेवकों को प्रशिक्षित करने के लिए घरों में मिला करती थीं(प्रेरितों 18:26)। आज भी संसार के बहुत से घरों में,मण्डलियां घरों में प्रार्थना सभा चलाती हैं।

इसके अलावा देखें: मैनुएल 3, परिशिष्ट 12 संगति। बाइबल में शब्द 'कलीसिया'

मैनुएल 3, परिशिष्ट 13 संगति। मसीही कलीसिया का प्रारूप व कार्य

मैनुएल 3, परिशिष्ट 14 संगति। प्रत्यक्ष में मसीह की देह के रूप में कलीसिया।

| 5 | **प्रार्थना** (8 मिनट) | *[ प्रतिक्रियाएं ]*<br>**परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर हेतु प्रार्थना** |
|---|---|---|

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

| 6 | **तैयारी** (2मिनट) | **[ निर्धारित कार्य ]**<br>**अगले अध्याय के लिए** |
|---|---|---|

***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें।
   समूह के दूसरे लोगों के साथ मिलकर 'मसीही समाज(कलीसिया)' की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, शिक्षा दे और अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: व्यवस्थाविवरण 28:1-31:13 से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। प्रश्नवाचक तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। 1 कुरिन्थियों 12:4-7,12-28। विषय : मसीही जीवन तथा कलीसिया में देह के समान कार्य । बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।